भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–14, अंक–2–3 मंगलवार, 26 फर.' 91	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी फरवरी, 1991	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

ब्रह्मप्रवाह

.....हमें तो पू. बापा को–आगे रखकर, पल-पल सैकण्ड-सैकण्ड वे सुझाव देवें वैसा सहज जीवन कर लेना है। उससे सभी कुछ–वच. प्र.27 व 62 के मुताबिक–जो कुछ हो रहा है, होगा और होने वाला है वह सब कुछ उनकी ही इच्छानुसार होता जायेगा। **हमें दो बातें अतिदृढ़ पकड़कर रखनी हैं।** एक पू. बापा की अखंड स्मृति और प्र. 16 के मुताबिक स्वयं का ही देखना। दूसरों का जो कुछ अच्छा हो वही गुणग्राहक दृष्टि और संबधवालों को दिव्य मानकर सेवा करनी। तो आनंद कराते-कराते ज्ञान देने की पू. बापा की रीति दिखाई देगी–अनुवृत्ति (मर्जी) समझ में आती जायेगी। सो, वैसा अनुभव करने तुम्हें (दिल्ली) भेजा है। अलौकिक भूमिका में पड़े बिना–मूर्ति में रहकर जो होता है वह देखा करना। अंत में पू. बापा काम करते दिखाई देंगे और अज्ञान टलता जायेगा। तो राजी रहना। पू. बापा को ही पकड़े रखकर बरतना, मजा आयेगा।

स्नेहाधीन–

दादुभाई के

जय स्वामिनारायण

29-12-67

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

जूनागढ़ में मंदिर का शुभ कार्य आरंभ करने महाराज ने ब्रह्मानंदस्वामी, स्वामिश्री (मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी) व साथ में जाने वाले संतों को बुलाकर आशीर्वाद दिये और ब्रह्मानंदस्वामी को कहाः 'जहाँ दादाभाई की बावड़ी है उसके पास तीन शिखर का उत्तम मंदिर बनाना।'

ब्रह्मानंदस्वामी व स्वामिश्री संतमंडल के साथ जूनागढ़ पहुँचे। मंदिर के लिए जगह तैयार थी। साथ में महाराज का आशीर्वाद और सत्य संकल्प था। लेकिन वहाँ शिवपंथी नागरों का स्वामिनारायण के संतों के प्रति खूब विरोध व रागद्वेष था। परन्तु ये संतों कुछ इन चीजों से डरे, वैसे नहीं थे। महाराज की आज्ञारूपी अमोघ शक्ति से नागरों की उपाधि को चूर-चूर कर देने की इनमें हिम्मत थी। थोड़े समय बाद गोपालानंदस्वामी जूनागढ़ पधारे.....फिर जब मंदिर के खात-महूर्त-शिलान्यास विधि का समय आया, तब गोपालानंदस्वामी ने स्वामिश्री को कहाः 'देखो, आपको यहाँ रहना है और तुम्हारे ही सिर पर यह जिम्मा है, इसलिये मंदिर का खात महूर्त आप ही करो।' इस प्रकार संवत् 1882 के वैशाख सुद तीज के शुभ दिन जूनागढ़ में अनादि ब्रह्म के नादब्रह्म को बहता रखने, शुद्ध उपासना का रहस्य यथार्थ समझाने ब्रह्मविद्या के केन्द्र के समान अक्षरधामतुल्य भव्य मंदिर का खात महूर्त स्वामिश्री के वरद् हस्तों से हुआ।

मंदिर की नींव खोदने का काम तेजी से चल रहा था। द्वेषी नागरों को लगा कि 'अगर स्वामिनारायण वालों का काम रुकवाया नहीं गया तो थोड़े समय में ही वे लोग मंदिर पूरा कर देंगे।' इसलिये नागर लोग इस काम में विघ्न डालने के कई उपाय ढूंढने लगे।

इसी दौरान ऐसा बना कि बरसात नहीं हुई... चारों तरफ पानी की कमी दिखाई पड़ने लगी। द्वेषी नागर तो मौके की तलाश में थे ही। उन्होंने जाकर नवाब के कान भरे कि 'सरकार ! स्वामिनारायण वालों ने मंदिर की नींव खोदने का काम पूरा कर दिया है, पर नींव में उन्होंने मन्तर मार के हड्डियाँ डाली है, इसलिए बरसात इस साल तो क्या, तीन साल तक होने के आसार नहीं लगते।' नवाब ने कहाः 'स्वामिनारायण के साधु तो फकीर जैसे हैं, लोगों को दुःख पहुँचे ऐसा वे क्यों करेगें?' द्वेषी नागर तो नवाब को भड़काने का ही ध्येय लेकर आये थे, सो बात को नया मोड़ दे दिया कि 'अगर बरसात नहीं होगी तो मजदूर सस्ते मिलेंगे और उनका मंदिर का काम जल्दी पूरा होगा।' यह बात नवाब के गले उतरी और नवाब ने नींव उखाड़ने के आदेश दे दिये।

यह सुनकर ब्रह्मानंदस्वामी स्वामिश्री को साथ में लेकर नवाब को मिलने गये और विवेकपूर्वक कहाः 'सरकार ! अगर हम हड्डियों को छू लें तो वस्त्र सहित स्नान करना पड़ता है। अतः आपको जो बात कही गई है वह सरासर गल्त है। आप भले नींव खुदवा लो, पर अगर उसमें से कोई हड्डियाँ नहीं निकलीं, तो नींव दुबारा बनवाने का पूरा खर्चा नागरों को देना पड़ेगा।' नवाब ने तुरंत नागरों को बुलाकर यह बात कही। अब नागर घबराये ! और खर्च देने से मना कर दिया। नागर लोग तो अब तक स्वामिनारायण के संतों को भीख माँगने वाले लल्लू बाबा ही समझते थे। तब ब्रह्मानंदस्वामी बोले 'सरकार ! इन्हें स्वामिनारायण का मंदिर नहीं होने

देना है इसलिये ऐसी झूठी गल्तफहमी फैला रहे हैं, पर धारा किसका होता है? मंदिर तो बनेगा ही और ये लोग अपनी आँखों से देखेंगे।' नवाब को भी ब्रह्मानंदस्वामी की बात पर विश्वास आया और उसने ब्रह्मानंदस्वामी को कहा कि 'आप बेहिचक से मंदिर का काम पूरा करवाओ।'

इधर गढ़डा में महराज ने अंतर्यामी रूप से अपने संतों पर आई विपत्ति को जानकर पत्र लिखवायाः 'तुम नवाब के पास जाना और कहना कि आज से तीसरे दिन बरसात होगी व जय-जयकार हो जायेगा।' ब्रह्मानंदस्वामी महाराज का वह पत्र लेकर नवाब के पास गये। नवाब एकदम बोल उठा 'खुदा को कितनी फिकर है?' तीसरे दिन खूब बरसात हुई और द्वेषी नागरों के मुँह लटक गये। इतना ही नहीं, बल्कि इससे भी अधिक बरसात के तेज बहाव से नदी के काफी पत्थर भी इस किनारे पर आ गये जो मंदिर बनाने के काम में आये.....फिर भी द्वेषी नागरों का द्वेष ठण्डा नहीं हुआ। मंदिर के बाहर खूब सुन्दर चबूतरा बना देखकर वे कहते– 'स्वामिनारायण वालों ने चबूतरा बनवाया है। स्वामिनारायण वालों का न तो खाने का ठिकाना है न पीने का ठिकाना है। स्वामिनारायण वाले तो भाग जायेंगे और यह चबूतरा हमारे बच्चों के खेलने के काम आयेगा।' यूँ अनेक अफवाहें वे लोग फैलाने लगे। उड़ते-उड़ते यह बात ब्रह्मानंदस्वामी के कानों में पहुँची। ब्रह्मानंदस्वामी हँसकर बोले : 'यहाँ तो द्वारिका खड़ी करेंगे और मूर्तिमान सिद्धेश्वर को पधरायेंगे, जिससे कि नागर लोग सब माथा घिसने यहाँ आयेंगे। यह तो पाताल में नींव खोदी है, सो जब तक सूर्य-चन्द्रमा तपेंगे तब तक यहाँ देवों की आरती के घंट बजेंगे।' परन्तु रागद्वेष के ही दायरों में फंसे हुए लोगों को ऐसे संतों की पहचान कैसे हो सकती है? उनकी महिमा भी वह कैसे समझ पायेंगे?

आज जूनागढ़ में भव्य विशाल मंदिर दिखाई पड़ता है.....पर उस समय कितनी विपत्तियों का सामना करके, अत्यधिक विरोधों में उस जंगमतीर्थ का निर्माण हुआ था.....इसका साक्षी तो इतिहास है।

* * *

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– **'THE DIVINE GRACE'**

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
4. Publisher's Name Nationality Address	: : :	As above
5. Editor's Name Nationality Address	: : :	As above
6. Owner's Name Nationality Address	: : :	As above

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Sadhu Mukundjivandas
Signature of Publisher

Date: 25th Feb, 1991

स्वामी की बातें

171. बड़ों की प्रसन्नता के बिना बीजरूप वासना टलती नहीं है....और नहीं दौड़ना हो तो भी दौड़ा जाये व न देखना हो तो भी देखा जाये ऐसा अवस्था का बल है ....

प्र-4,25

172. .....बातें सुनते-सुनते जैसे-जैसे महिमा पता चलेगी, वैसे-वैसे दोष टलेंगे। महिमा में कसर है.....

प्र-4,29

173. इतना ही समझना है कि देह छोड़कर जिन्हें मिलना था, जिसे पाना था और दूसरे भक्तों ने भी देह छोड़कर जिन्हें पाया है उन्हें हमने देह रहते हुए पा लिया है। वही के वही भगवान व वही के वही साधु हैं; पर हमें जो प्राप्ति, महिमा, सुख व लाभ हुआ है उसे हम पहचानते नहीं हैं; क्योंकि भगवान की माया ने बाँध लिया है व जितना अज्ञान है इतना दुःख है.....

प्र-4,30

174. स्वयं निष्कामी हो और निष्कामी की रीत को जानता हो, वही दूसरों को निष्कामी बना सकता है। प्र-4,31

175. ऐसी बातें दूसरी कोई जगह नहीं होती, ये तो अक्षरधाम की बातें हैं, भगवान की हैं, नारायण की हैं। और बुद्धिशाली हो वह साधु को पहचाने, सत्संग को पहचाने। इसलिये महाराज ने कहा है कि बुद्धिशाली से हमें लगाव होता है। प्र-4,35

176. प्रगट भगवान के बिना कोई करोड़ नियम पाले, पर कल्याण नहीं होता और प्रगट भगवान व इस साधु की आज्ञा से एक नियम रखे तो कल्याण होता है। और आज तो मौज दी है, उस मौज का मूल्य नहीं होता। इसलिये ग्यारह नियम पालने व महाराज को भगवान पुरुषोत्तम—सर्व के कारण समझना। ऐसी ज्ञान की दृढ़ता करे, उसे कुछ शेष करना रहा नहीं। भजन कम होगा, तीर्थ कम होंगे उसकी चिन्ता नहीं है।

प्र-4, 37

177. स्वामिनारायण के नाम से काले सर्प का जहर चढ़ता नहीं और किसी की देह का आयुष्य पूरा हुआ हो तो मर जाये, वरना यह मंत्र जपे तो मरे नहीं। और यह भगवान, यह मंत्र व यह साधु दूसरी कोई जगह पर नहीं।

प्र-4,38

178. 'दूसरों को तो कामवासना परेशान नहीं करती और मुझे अकेले को ही परेशान करती है व दूसरों में तो एक भी दोष नहीं है, मेरे में ही है—' जो यूं नहीं समझता व दूसरों का देखने लगता है उसका बूरा होता है।

प्र-4,39

179. लाभ का पार नहीं है और इसमें से (इस सत्संग से) निकल जाये तो नुकसान का भी पार नहीं है। बहुत ही बड़ा लाभ हुआ है, वह कहा जाये ऐसा नहीं है। प्र-4, 44

180. जिसे भगवान में जुड़ जाने की रुचि हो और उसकी देह का अंत आ जाये तो भगवान व साधु उसकी मदद करते हैं, रक्षा करते हैं। उससे भगवान के साथ जुड़ा जाता है, इसलिये रुचि अच्छी रखना। प्र-4, 45

☐ ☐ ☐ ☐ ☐

जन्म-कर्म च मे दिव्यं—

गुरुहरि योगीजी महाराज अफ्रीका की धर्मयात्रा पर जाने से पहले संतमंडल के साथ गोष्ठी में बैठकर उन्हें परामर्श देते हुए बोले : **'मुझे कभी छोटे से छोटे सत्संगी का भी अभाव आता नहीं है। दोष दिखाई ही नहीं देता, (दोष) दिखने भी नहीं देता।'** सबको (सब में) मैं ब्रह्म की मूर्ति देखता हूँ, मायिक भाव आता ही नहीं। सबको चैतन्य मूर्ति समझता हूँ। **कभी मनुष्य भाव आ भी जाये, तो महिमा का ख्याल करता हूँ** यह शास्त्रीजी महाराज और कृष्णजी अदा की दृष्टि से (कृपा से) है, मुझमें तो कुछ नहीं है।

अहो हो ! कैसे समर्थ होते हुए भी झरने की भाँति ही बहता निःस्वार्थ प्रेम-अभेददृष्टि....कैसी अजीब बात है कि बड़े पुरुष हमारे अन्दर की सब गटर को जानते हुए भी हमें प्यार देने में कभी कमी नहीं करते। और.....हममें तो तनिक भी बरकत नहीं है, तब भी पल-पल प्रभु रखे संत और उसके संबंध वालों के दोष देखते ही रहते हैं। प.पू. काकाजी के मुँह से हम सबने कई बार सुना था—'bathroom **में किये तुम्हारे संकल्प-विचार मुझे एक्सरे प्लेट की तरह दिखाई पड़ते हैं...पर फिर भी मैं तुमसे कितनी निर्दोषबुद्धि रखता हूँ और तुम मुझे ही मायिक दृष्टि से देखते हो।'** हम सभी विचारें—क्या हम गुरुहरि योगीजी महाराज, प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी के कहलाने योग्य सही अर्थ में माने जायेंगे?

स्वामिश्री ने आगे बात करते हुए बताया—'जूनागढ़ में माधवदास करके 102 साल की आयु के एक साधु थे। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने उस साधु से निष्कामशुद्धि लिखवाई थी। वह साधु मुंडेरी से गिर पड़े, तो मेरे गुरु कृष्णचरणदास स्वामी ने उस साधु की सेवा करने की मुझे आज्ञा करी....छः महीने तक मैंने उसकी खूब सेवा करी, उस समय मैं पार्षद था। उस साधु के पेट की मालिश करता छः महीने तक मंदिर में भैंसे चराई। सुबह के आठ बजे जाते और शाम को पाँच बजे वापस आते। शाम को दातुन काट कर ले आते, लगभग दो हजार दातुन ! जूनागढ़ के दो सौ साधुओं को तीन दिन तक वे दातुन चलते। छः महीने तक मंदिर में उपले थापे और तीन महीने तक फूस के पूड़े बाँधने का काम किया था।

जूनागढ़ में बीस सद्गुरुओं की सेवा की थी, उस समय देह सहन कर सकता था। सद्. बालमुकुंददास स्वामी राजकोट आये थे। उस समय कृष्णजी अदा की आज्ञा से एक महीने तक सद्. बालमुकुंददास स्वामी को दोपहर को पंखा झलता। इतनी धीरे पंखा झलता कि उन्हें नींद आ जाती और शांति हो जाती। इसलिये उनकी दृष्टि पड़ गई थी।

'सहन करना सीखना। आठ साल तक जूते खाये हैं (सहन किया है), और सिर में यह टाल पड़ गई है। डांगरा में मंदिर बन रहा था तब सुबह जल्दी उठकर मैं रसोई बना देता था, उस समय **काम करने वाले मजदूर लोग भी मुझे टोकते, वह भी सहन कर लेता।**

गुरुहरि योगीजी महाराज का संतों को यह सब बताने के पीछे यही अभिप्राय था कि धीरज और निर्दोषभाव से करी सेवा ही प्रभु स्वीकार करते हैं.....ऐसी सेवा करने से ही हम बड़े पुरुष की दृष्टि में आते हैं। ऐसी सेवा से ही भगवान की मूर्ति बक्षिश मिलती है और गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं ऐसा जीवन जीकर आने वाली पीढ़ियों के लिये पथ प्रदर्शित किया जबकि वे तो कितने समर्थ थे.....धन्य धन्य हो संत सुजान को.....

☐ ☐ ☐ ☐ ☐

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	28.2.91	गुरुवार	पूर्णिमा, पू.भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन, होलिका दहन
2.	दि.	1.3.91	शुक्रवार	धुलेण्डी, होली रंगोत्सव प.पू. साहेब की जन्म जयंती
3.	दि.	7.3.91	गुरुवार	ब्र.स्व. काकाश्री स्वधामगमन दिन
4.	दि.	12.3.91	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	24.3.91	रविवार	रामनवमी, भगवान स्वामिनारायण की जयंती, निर्जला व्रत
6.	दि.	26.3.91	मंगलवार	एकादशी, व्रत

❀ ❀ ❀ ❀

सूचना

बम्बई स्थित हमारे ताड़देव मंदिर का एक फोन नंबर बदल गया है।

नया नंबर 3094177 है।

दूसरे फोन का नंबर 392527 वही ही रहा है।

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. Printers**, Shahadra, Delhi-110032